ये अव्यक्त इशारे

श्रेष्ठ स्वमानधारी, सम्मानदाता बनो

7-06-2023

मन-वचन-कर्म तीनों में ध्यान रखो कि एक तो सदा स्वमान में रहना है। दूसरा - हर कदम बाप के फ़रमान पर चलना है। तीसरा -सर्व के सम्पर्क में आने में सम्मान देना है। लेकिन ऐसा सम्मान दाता वही बनते हैं जो सदा निर्मान रहते हैं। मान लेने की इच्छा से परे होने के कारण, वे सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने का पात्र बन जाते हैं – यह आनादि नियम है।

Be one with elevated self-respect and continue to regard to everyone.

Pay attention to all three – your thoughts, words and deeds, 1) You always have to maintain your self-respect. 2) You have to take every step according to the Father's orders. 3) Give regard to anyone you come into contact with. However, only those who constantly remain humble can become bestowers of such self-respect. Because they are beyond any desire of receiving respect, they become worthy to receive elevated respect from everyone. This is an eternal law.